RDH

# भारतीय जनजातीय समाज
## मुद्दे और चुनौतियाँ

2018

डॉ. मन्जू मीणा
डॉ. अशोक कुमार मीणा

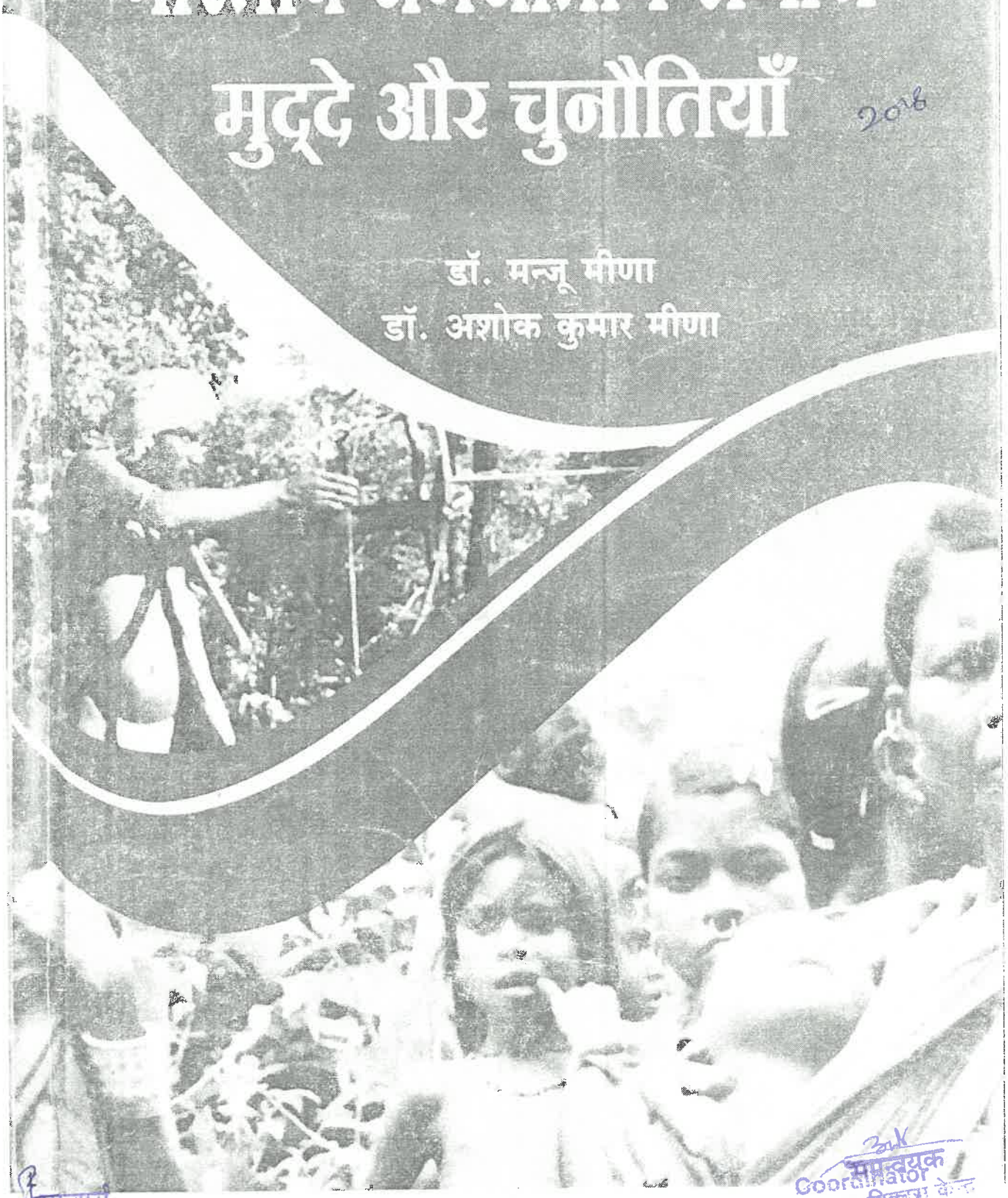



प्राचार्य
राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

समन्वयक
Coordinator
IQAC
GOVT. ... (Alwar) Raj.

प्रकाशक :

किरण परनामी

राज पब्लिशिंग हाउस

44, परनामी मन्दिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर - 302004

फोन : 0141-2622141 (ऑ.), 2614363(नि.)

Cell : 09414051782

E-mail : shreerajpublishing@gmail.com

*मुद्रक एवं प्रकाशक :*

ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज

एच 32, गली नं. 15, जगत पुरी, दिल्ली - 110051

E-mail : tridententerprisesindia@gmail.com

भारतीय जनजातीय समाज : मुद्दे और चुनौतियाँ

© डॉ. मन्जू मीणा, डॉ. अशोक कुमार मीणा

प्रथम संस्करण, 2018

**ISBN : 978-81-938545-7-0**

*लेखक का सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक व लेखक की पूर्वानुमति के बिना नहीं छापा जा सकता है। पुस्तक के किसी भी भाग को इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रोस्टेटिक, मैग्नेटिक, सीडी, टेप, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, ध्वनि अथवा अन्य किसी माध्यम पर प्रकाशक व लेखक की पूर्वानुमति के बिना संग्रहीत भी नहीं किया जा सकता है।*

आचार्य
राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College Rajgarh (Alwar) Raj.

7. जनजातीय समाज में विवाह एवं विवाह विच्छेद परम्पराएँ — 70
डॉ. मानप्रकाश मीणा

8. ब्रिटिश शासन में जनजाति विद्रोह: एक विवेचन — 79
महेन्द्र सिंह, नीतू जेवरिया

9. राजस्थान के आदिवासी समाज की समस्याएँ — 89
डॉ.आंचल मीणा

10. आदिवासी साहित्य की अवधारणा — 100
हेमलता कुमारी मीना, डॉ. मन्जू मीणा

11. आदिवासी संघर्ष एवं मानवाधिकार — 110
डॉ. सुचेता गुप्ता

12. आदिवासी जन: एक अध्ययन — 119
डॉ. रामेश्वर प्रसाद मीना

13. औषधीय पौधे: आदिवासी अंगरंग — 123
डॉ. दुर्गेश नन्दनी

14. आदिवासी साहित्य: मूल्य व परम्परा — 135
बाबूलाल बैरवा 'नागर'

15. हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी स्त्री संघर्ष — 142
सीमा कुमारी मीना

16. बदलते परिवेश में जनजातीय महिला — 152
डॉ. राकेश कुमार

17. राजस्थान के स्वाधीनता संग्राम में आदिवासी मीणा जनजाति की भूमिका — 170
रजनी मीणा

Coordinator / समन्वयक

प्राचार्य
राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

# महिला सशक्तिकरण और उत्पीड़न

डॉ. मीनाक्षी मीना

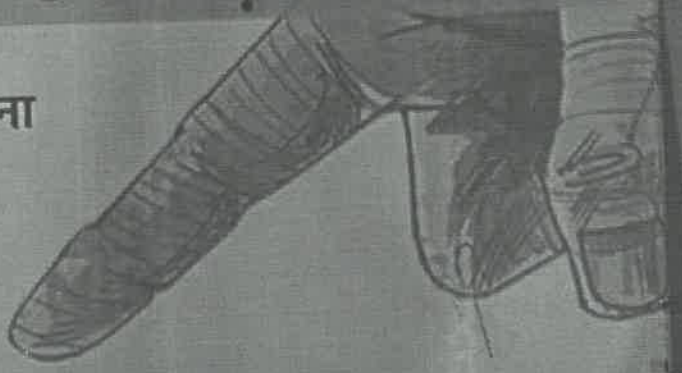

COMPLIMENTARY/AUTHOR COPY

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| • | भूमिका | v |
| 1. | सामाजिक व्यवस्था एवं महिलाएँ | 1 |
| 2. | भारतीय समाज और महिला सशक्तिकरण | 14 |
| 3. | महिला सशक्तिकरण का इतिहास और नारी की गरिमा | 25 |
| 4. | संस्कृति और साहित्य में नारी का उत्थान | 108 |
| 5. | सशक्त नारी एवं सामाजिक उत्पीड़न | 120 |
| 6. | महिला शिक्षा एवं प्रगति | 145 |
| 7. | महिला उत्थान की वास्तविकता एवं कार्यशील महिला | 155 |
| 8. | महिलाओं के प्रति साइबर अपराध का बढ़ता ग्राफ | 168 |
| 9. | भारतीय दण्ड संहिता एवं महिला आयोग | 176 |
| 10. | संवैधानिक स्वरूप में महिलाओं की स्थिति | 190 |
| 11. | मीडिया द्वारा नारी का उत्पीड़न | 202 |
| 12. | सामाजिक उपेक्षा एवं सशक्त नारी | 213 |
| 13. | विज्ञान और महिलाओं के प्रति अपराध | 234 |
| 14. | आर्थिक दशा एवं महिला स्वास्थ्य | 246 |
| • | संदर्भ ग्रंथ सूची | 255 |

कक्षा
9 से 12

ISBN: 978-93-87089-12-9

# हिन्दी व्याकरण

एवं

# रचना-प्रबोध

राजकीय विद्यालयों में
निःशुल्क
वितरण हेतु

Scanned by CamScanner

# पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

**पुस्तक – हिन्दी व्याकरण एवं रचना प्रबोध**
**(कक्षा–9, 10, 11 व 12 के लिए)**


संयोजक :– डॉ. शिवशरण कौशिक, वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा

लेखकगण :–
1. डॉ. नवीन कुमार नंदवाना
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
2. श्रीमती दर्शना 'उत्सुक', प्रधानाचार्या
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चरण डूंगरी, जयपुर
3. श्री रामेन्द्र कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मोखमपुरा, जयपुर



प्राचार्य

समन्वयक
Coordinator
IQAC CELL

Scanned by CamScanner

संस्करण 2018

© माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

पेपर उपयोग : 80 जी.एस.एम. मैफलीथो पेपर
आर.एस.टी.बी. वाटरमार्क

कवर पेपर : 220 जी.एस.एम. इण्डियन आर्ट कार्ड कवर पेपर

प्रकाशक : राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
2-2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक : संजीवनी परफेक्ट बाइंडिंग एण्ड प्रिण्टर्स जयपुर

मुद्रण संख्या : 3,31,000

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर नहीं दी जाएगी, न बेची जाएगी।

- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

# सन्नू मेवाती का दोहा-संसार

टीका-सम्पादन - 2018

सम्पादक

**डॉ. देशराज वर्मा**
सह-आचार्य - हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय,
राजगढ़ (अलवर)

**डॉ. फूलसिंह सहारिया**
सह-आचार्य - इतिहास
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय
अलवर (राज.)

प्रकाशकः
**मेवाती साहित्य अकादमी संस्थान**
बख्तल की चौकी, अलवर (राज.) 301001

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

समन्वयक
Govt. College Rajgarh (Alwar) Raj.
राजगढ़ (अलवर)

प्रकाशक-
मेवाती साहित्य अकादमी संस्थान
बख्तल की चौकी, अलवर (राज.) 301001
मो. 09413631381, 09664386844

© सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण - 30 जून, 2018

ISBN - 978-81-931275-4-4

मूल्य - 375.00 रूपये मात्र

लेजर टाईप सेटिंग : कीर्ति कम्प्यूटर, अलवर

मुद्रक : शीतल ऑफसेट, जयपुर

**वैधानिक चेतावनी**

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री, भारतीय कापीराइट एक्ट के अन्तर्गत लेखक तथा प्रकाशक के पास सुरक्षित है। उनकी अनुमति के बिना इस पुस्तक का नाम, टाइटल डिजाइन, अन्दर के मैटर आदि का आंशिक या पूर्ण रूप से उपयोग अथवा यथावत या तोड़ मरोड़कर एवं किसी भी भाषा में छापने एवं प्रकाशित करने या किसी तकनीक द्वारा स्टोर करने या सम्प्रेषण करने वाले पर उचित कानूनी कार्यवाही की जायेगी एवं वह हर्जे-खर्चे व हानि के लिए स्वयं जिम्मेदार होगा।

पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है। पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक व प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी के बावजूद भी कुछ गलतियाँ रह जाना संभव है, जिसके लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं लेखक-सम्पादक जिम्मेदार नहीं होगा, जिल्द (बाइंडिंग) व मुद्रण की गलती के कारण रह गई त्रुटि में उस भाग का पन्ना पुस्तक लाने पर या सूचित करने पर बदल कर दे दिया जायेगा। किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर ही होगा।

Coordinator
युवा विकास केन्द्र
राजकीय महाविद्यालय (अलवर)

# भूमिका

## सन्नू मेवाती के दोहे और मेवाती समाज

मेवात अंचल की बोली 'मेवाती' में मौखिक साहित्य की एक लम्बी एवं समृद्ध परम्परा रही है जिसमें सादल्ला, नबीखाँ, भीकजी, एवज, दानशा, नत्थू खक्के आदि लोककवियों का विशेष योगदान रहा है। सादल्ला और नबीखाँ ने तो मेवाती महाभारत जैसा 'पण्डून कौ कड़ा' रचकर मिली जुली मेवाती लोक संस्कृति के एक सोपान के रूप में भाईचारे की भावना को मजबूती प्रदान की। इस इलाके में जितने भी शायर हुए, उन्होंने अपनी शायरी के माध्यम से यहाँ के आम मेहनतकश वर्ग की भावनाओं को ही जैसे व्यक्त किया। इसके अलावा इस संस्कृति का संरक्षण, प्रतिपादन वं संयोजन का काम लम्बे समय से मीरासियों के एक बड़े समूह ने किया है, जो पूरे मेवात में आज भी इस धारा को सूखने से बचाये हुए हैं। यद्यपि यह धारा अब सूखने के कगार पर आ गई है। अब पुराने मेवों और मीरासियों की यादों में ही यह कहीं-कहीं बसी हुई है। मेवात में शायरी, गीत और दूहों के अलावा बात-साहित्य की परम्परा भी लम्बे समय से रही है जिसमें स्थानीय भावनाओं और संघर्षों को खास जगह देकर एक स्वतंत्र जन-सांस्कृतिक इतिहास को मौखिक रूप में कहा जाता रहा है।

इसी परम्परा में लार्ड सन्नू मेवाती का नाम एक आधुनिक मेवाती शायर के रूप में विशेष तौर पर उल्लेखनीय है, जिन्होंने मेवात की अपनी भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना का चित्रण अपने विशिष्ट मुहावरे एवं लहजे में किया है। मेवाती लोक साहित्य एवं संस्कृति की दुनिया में लार्ड सन्नू मेवाती एक प्रतिष्ठित नाम ही नहीं, वरन भाईचारे व उदारता की समन्वित सामासिक संस्कृति को सुदृढ़ करने का मजबूत कदम भी है। उन्होंने अपने जीवन-काल में मुख्य रूप से लोगों के दिलों को जोड़ने का काम

# पूर्वी राजस्थान का इतिहास और संस्कृति

(जन चेतना, कला, साहित्य, समाज और संस्कृति)

शोधालेख - 2018

सम्पादक

**डॉ. फूलसिंह सहारिया**

प्राध्यापक, इतिहास विभाग

बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,

अलवर (राज.)

**गौरांग प्रकाशन**

जयपुर

समन्वयक
Coordinator
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर)
Govt. College, Rajgarh (Alwar) (Raj.)

आचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

13. ब्रिटिशकालीन भरतपुर में शिक्षा ( कुलीन वर्ग के विशेष संदर्भ में ) 129
डॉ. मीना अम्बेश
14. अलवर रियासत में हिन्दी का विकास 137
( महाराजा जयसिंह के विशेष संदर्भ में )
हंसराज सोनी
15. अलवर के सन्त चरणदास ( 1703 ई.-1782 ई. ) 150
डॉ. देशराज वर्मा
16. सहजोबाई : गुरूभक्ति और ज्ञान योग 167
मीनाक्षी श्रीवास्तव
17. भर्तृहरि और उनके मुक्तक काव्य 176
डॉ. पुष्पा
18. ब्रज-मेवाती की कृषि सम्बन्धी लोकोक्ति-कहावतें: अंतर्सम्बन्ध 185
डॉ. छंगाराम मीना
19. पूर्वी राजस्थान के विशिष्ट सांस्कृतिक क्षेत्र 194
डॉ. अनूप सिंह
20. पूर्वी राजस्थान की चित्रकला व लोक संस्कृति 206
डॉ. अलका कटारा
21. भरतपुर क्षेत्र से प्राप्त कुषाण एवं गुप्तकालीन शैव प्रतिमाएँ 223
डॉ. गोविन्द सिंह मीणा
22. मत्स्य क्षेत्र के संस्कृत साहित्यकार 232
डॉ. जे.सी.नारायणन
23. संस्कृत भाषा के परिप्रेक्ष्य में मेवाती बोली 244
कोमल अग्रवाल, डॉ. योगेन्द्र कुमार धामा
24. पूर्वी राजस्थान के पर्यटन स्थल 250
धीरेन्द्र कुमार, कुसुमसिंह सहारिया

युवा विकास केन्द्र

# 1

# पूर्वी राजस्थान की भौगोलिक स्थिति

डॉ. विजय वर्मा*

मत्स्य क्षेत्र के नाम से विख्यात राजस्थान के उत्तरी-पूर्वी छोर पर अवस्थित अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली जिले पूर्वी राजस्थान के क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। इस क्षेत्र के उत्तर में हरियाणा, पूर्व में उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश की सीमाएं लगती है। यह क्षेत्र 26°42' उत्तरी अंक्षाश से 28°30' उत्तरी अक्षांश देशान्तरीय विस्तार 76°38' पूर्वी देशान्तर से 18°17' पूर्वी देशान्तर में अवस्थित है। पूर्वी राजस्थान का विस्तार 20° अंक्षाशीय व देशान्तरीय आधार पर स्थित है। वर्तमान में इस क्षेत्र का सम्पूर्ण अलवर जिला तथा भरतपुर जिले के पहाड़ी, कामां, नगर, डीग, कुम्हेर, भरतपुर और नदबई तहसील राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सम्मिलित है।

**भूगर्भिक संरचना**- भूगर्भिक संरचना से तात्पर्य शैलों की संरचना एवं उद्भव से होता है। भूगर्भिक संरचना के आधार पर ही किसी क्षेत्र के उच्चावच/भौतिक स्वरूप का निर्धारण होता है। भूगर्भिक संरचना के अध्ययन का उद्देश्य चट्टानों के ऐतिहासिक क्रम में व्यवस्थित करते हुए वर्गीकृत तथा विवरण करना है। इसके लिए चट्टानों का निर्माण, वर्गीकरण एवं समय निर्धारण, जीवाश्म की मात्रा और उनका अध्यारोपण का क्रम जानना आवश्यक है।

* एसोशिए फेसर - भूगोल विभाग, बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

# वीर योद्धा
# हसन खाँ मेवाती

शोधालेख - 2018

सम्पादक

**डॉ. फूलसिंह सहारिया**
एसोसिएट प्रोफेसर- इतिहास विभाग
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर ( राज. )

**मुंशी खाँ बालौत**
सचिव, मेवाती साहित्य अकादमी संस्थान
अलवर ( राज. )
प्रधान सम्पादक, चिराग-ए-मेवात 'पाक्षिक'
अलवर ( राज. )

प्रकाशकः
मेवाती साहित्य अकादमी संस्थान
बख्तल की चौकी, अलवर- 301001 ( राज. )

समन्वयक
युवा विकास केन्द्र
GOVT. College Rajgarh (Alwar) Raj.
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर)

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

प्रकाशक-
मेवाती साहित्य अकादमी संस्थान
बखल की चौकी, अलवर-301001 ( राज. )
मो. 09413631381, 09664386844

© सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण - 2018
ISBN - 978-81-931275-3-7

Rs. 395/-

चेतावनी- पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक एवं सम्पादक की पूर्वानुमति के बिना नहीं छापा जा सकता है। इस पुस्तक के किसी भी भाग को इलेक्टास्टेटिक, मैग्नेटिक, सीडी, मैकेनिकल फोटोकोपी, रिकॉर्डिंग, ध्वनि अथवा अन्य किसी माध्यम पर प्रकाशिक एवं सम्पादक की पूर्वानुमति के बिना संगृहीत भी नहीं किया जा सकता हैं। इस पुस्तक के आलेखों में दिये गये तथ्य एवं सामग्री सभी लेखकों के स्वतंत्र विचार हैं, जिनके लिए संपादक एवं प्रकाशक जिम्मेदार नहीं हैं।

लेजर टाईप संटिंग : कीर्ति कम्प्यूटर, अलवर

मुद्रक :

Co-ordinator
GOVT. College, Kishangarh (Alwar) Raj.

# भूमिका

मेवाती साहित्य अकादमी संस्थान, अलर द्वारा डॉ. फूलसिंह सहारिया एवं मुंशी खाँ के सम्पादन में 'वीर योद्धा हसन खाँ मेवाती' नामक यह पुस्तक जनपदीय इतिहास लेखन की दृष्टि में एक बड़ी जरूरत की पूर्ति करेगी, ऐसा मैं मानता हूँ। इस तरह की इतिहास-कृतियों का महत्त्व तब और बढ़ जाता है, जब 'राष्ट्रवाद' को उसकी सामासिकता और बहुलता से काटकर एक संकीर्ण एवं एकरूपताधर्मी दिशा की ओर मोड़ने की कोशिशें की जा रही हों। यह ठीक है कि राष्ट्र के जीवन में 'धर्म' की भूमिका रहती है। लेकिन उसके निर्माण में धार्मिक विविधता की भूमिका को नहीं नकारा जा सकता। इतिहास में ऐसे अनगिनत प्रसंग हैं जब 'राष्ट्र' और 'राष्ट्रभूमि' किसी मज़हब की सीमा का अतिक्रमण कर जाते हैं। दिल्ली की दक्षिणी सीमा से सटे, 'मेवात' जनपद में सोलहवीं सदी की शुरूआत में तब ऐसा ही हुआ, जब बाबर का खानवा के मैदान में राणासांगा से 15 मार्च 1527 को युद्ध हुआ। उस समय अलवर मेवात के तत्कालीन शासक हसन खाँ मेवाती ने मज़हब से ऊपर उठकर अपनी भूमि प्रेम और देशानुरागी होने का परिचय दिया। उसने अपने सधर्मी बाबर के प्रलोभन को नजरअंदाज कर राणा सांगा के पक्ष में खड़े होने और बाबर से युद्ध करने का निर्णय किया और वह इसी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। इससे पहले हुए पानीपत युद्ध में बाबर के विरूद्ध इब्राहीम लोदी की तरफ से लड़ते हुए हसन खां मेवाती के पिता अलावल खाँ वीरगति को प्राप्त हो चुके थे। इस तरह के ऐतिहासिक प्रसंग इतिहास के भीतर दबे पड़े हैं,

बढ़ाया था परन्तु स्वाभिमानी हसन खां ने स्वदेश प्रेम के सामने आतिथ्य को भी ठुकरा दिया तथा मेवाड के शासक राणा सांगा का साथ दिया और खानवा के युद्ध में बाबर के विरूद्ध आ डटा। दोनों सेनाओं में युद्ध हो रहा था कि राणा सांगा के सिर पर एक तीर लगा जिसके कारण वह बेहोश हो गया और राजपूती सेना नेतृत्वहीन होने के कारण चारों ओर से घिर गयी। इस युद्ध में अनेक वीर-योद्धाओं के साथ हसन खां मेवाती भी खेत रहे।

'वीर योद्धा हसन खाँ मेवाती' पुस्तक के सम्पादक डॉ. फूलसिंह सहारिया एवं कॉ. मुंशी खाँ बालौत बधाई के पात्र हैं जिन्होंने विभिन्न इतिहासकारों, विद्वानों द्वारा तथ्यपूर्ण सामग्री संकलित कर मेवाती साहित्य अकादमी संस्थान, अलवर द्वारा प्रकाशित किया है। इस पुस्तक में दी गई सामग्री इतिहास प्रेमियों तथा शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इस पुस्तक का पाठ्कगण हृदय से स्वागत करेंगे। शुभकामनाओं के साथ...

**विजय लक्ष्मी भार्गव**
पूर्व प्राचार्य,
राजस्थान कॉलेज शिक्षा विभाग,
119 अल्कापुरी, अलर

# अनुक्रमणिका

**भाग- प्रथम : इतिहास खण्ड**


1. **खानजादों का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय** — 3
   डॉ. विजय लक्ष्मी भार्गव

2. **मेवात की अस्मिता-हसन खां मेवातीः एक अध्ययन** — 11
   डॉ. फूलसिंह सहारिया

3. **खानवा का युद्ध और हसन खाँ मेवाती** — 29
   सिद्दीक अहमद 'मेव'

4. **बाबरनामा : मेवात और हसन खाँ मेवाती** — 47
   डॉ. जीवन सिंह मानवी

5. **सोलहवीं सदी के शहीद-ए-हिन्द राजा हसन खाँ** — 53
   मोहम्मद स्वालेह खाँ बीबा

6. **नरसिंह मेव कृत हसन खाँ की कथा** — 60
   डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा

7. **हसन खाँ मेवाती : एक सिहावलोकन** — 82
   डॉ. अनूपमसिंह, डॉ. देशराज वर्मा

8. **हसन खाँ** — 87
   डॉ. मुंशी खाँ 'बालोत'

2017-18




ISBN : 978-93-86319-84-5

Edition : 2018

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC-CELL
GOVT. P.G. College Rajgarh (Alwar) Raj.

6

# INTRODUCTION TO PLANT PATHOLOGY

COMPLIMENTRY COPY

Om Prakash Meena

PARADISE
PUBLISHERS
Jaipur (India)

*Published By :*
**PARADISE PUBLISHERS**
A-436 A, Satlaj Path, Tara Nagar - A,
Jhotwara, Jaipur - 302012 1
Mobile : 09460309322, 09660064582
**E-mail :** paradisepublishers@gmail.com
**Web Site :** www.paradisepublishers.in

**Rs. 1495/-**

**First Published - 2018**

**©Reserved**

**ISBN :** 978-93-86319-84-5

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any mean without permission in writing from the publisher.

# *Content*


| | | |
|---|---|---|
| • | *Preface* | *iii* |
| 1. | History of Plant Pathology | 1 |
| 2. | Tolerance in Crop Plants | 19 |
| 3. | Scope and Contributions of Micro-organisms | 37 |
| 4. | Alteration of the Respiratory Pattern in Infected Plants | 65 |
| 5. | Principles Of Plant Disease Control | 92 |
| 6. | Methods of Plant Metabolism | 110 |
| 7. | Water is Deficient | 147 |
| 8. | Physiology and Biochemistry of Defense | 162 |
| 9. | Microbial Reproduction and Growth | 184 |
| 10. | Genetic Transformation in Leguminous Crops | 203 |
| 11. | Hypersensitivity | 214 |
| • | *Bibliograpy* | 249 |

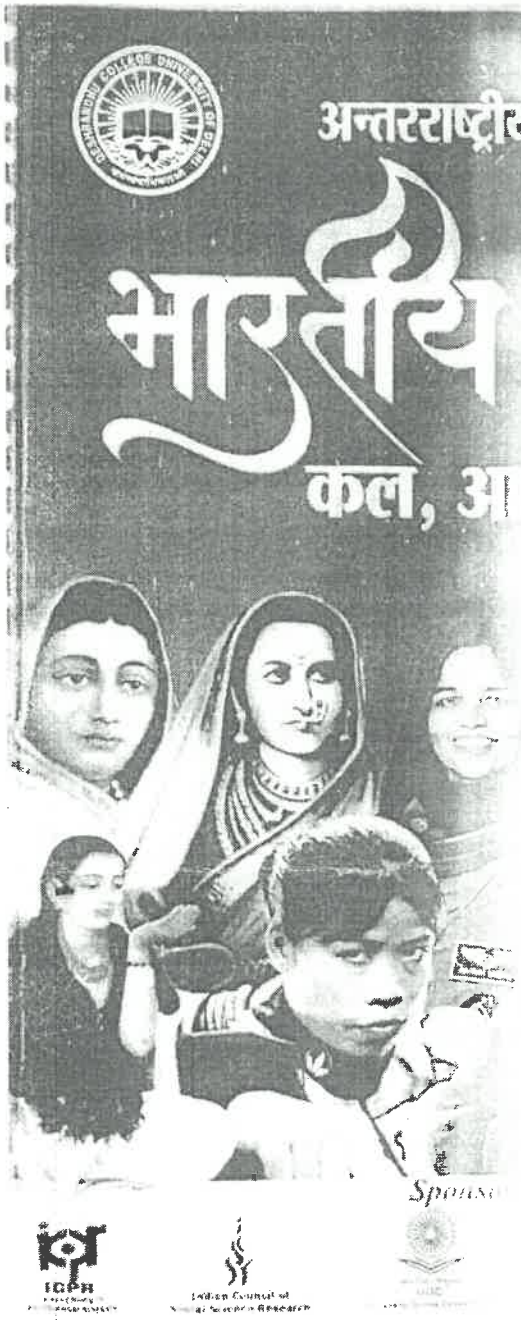

अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन

# भारतीय नारी

## कल, आज और कल

23-24 फरवरी, 2018, नई दिल्ली

प्राचार्य
राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
GOVT. College

अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन

# भारतीय नारी
## कल, आज और कल

23-24 फरवरी, 2018, नई दिल्ली

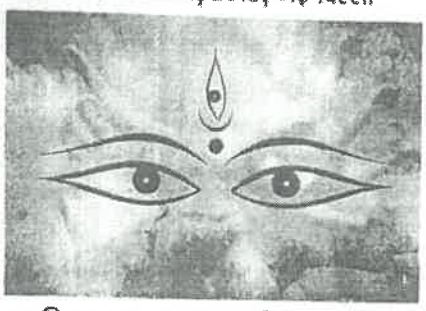



नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमम त्राणां नास्ति मातृ समा प्रिया।।

...ता के समान कोई छाया नहीं है, माता के समान कोई सहारा नहीं है।
...ता के समान कोई रक्षक नहीं है और माता के समान कोई प्रिय नही है।

### आयोजन समिति

डॉ. राकेश पाण्डेय, डॉ. विरेन्द्र भारद्वाज, डॉ. एच.सी. जैन, डॉ. बी.एस. नेगी
प्रो. सतीश कुमार, प्रो. अरुण भगत, प्रो. इला कुमार, डॉ. अनुराग मिश्रा
डॉ. मनोज खन्ना, डॉ. पायल मागो, जगदीश कौशिक, वेद प्रकाश
राजेन्द्र गोयल, डॉ. माधव गोविन्द, डॉ. प्रद्युम्न कुमार, डॉ. रसाल सिंह
डॉ. सुनील कश्यप, डॉ. सविता मित्तल, डॉ. निशा राणा, डॉ. चारू कालरा
डॉ. विभूति गौड़, डॉ. रुबी मिश्रा, डॉ. संजय कुमार, डॉ. मनोज राणा

प्रकाशन तिथि : 23 फरवरी, 2019 विक्रम संवत् 2075, युगाब्द 5120
अक्षर संयोजन : अजीत झा, सागर कम्प्यूटर, जयपुर
मुद्रक : पॉयोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लिमिटेड, उदयपुर

प्रकाशित लेख में लेखकों के निजी विचार हैं, इससे संपादक मण्डल का सह...

प्राचार्य

Coordinator
युवा विकास केन्द्र
राजकीय महाविद्यालय ...

प्रकाशक :

किरण परनामी

राज पब्लिशिंग हाउस

44, परनामी मन्दिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर - 302004

फोन : 0141-2622141 (अ.), 2614363(नि.)

Cell : 09414051782

E-mail : shreerajpublishing@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक :

ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज

एच 32, गली नं. 15, जगत पुरी, दिल्ली - 110051

E-mail : tridententerprisesindia@gmail.com

भारतीय जनजातीय समाज : मुद्दे और चुनौतियाँ

© डॉ. मन्जू मीणा, डॉ. अशोक कुमार मीणा

प्रथम संस्करण, 2018

ISBN : 978-81-938545-7-0

*लेखक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक व लेखक की पूर्वानुमति के बिना नहीं छापा जा सकता है। पुस्तक के किसी भी भाग को इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रोस्टेटिक, मैग्नेटिक, सॉफ्ट, टेप, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, ध्वनि अथवा अन्य किसी माध्यम पर प्रकाशक व लेखक की पूर्वानुमति के बिना संग्रहीत भी नहीं किया जा सकता है।*

Scanned with CamScanner

# अनुक्रमणिका


| अध्याय | विषय वस्तु | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | समर्पण | (iii) |
| | आमुख | (v) |
| 1. | अनुसूचित जनजातियों का उत्थान: संवैधानिक प्रावधानों के संदर्भ में मूल्यांकन<br>डॉ. संजय कुमार मण्डावत | 1 |
| 2. | आदिवासियों के मुद्दे एवं चुनौतियाँ<br>ताराचन्द वर्मा | 11 |
| 3. | परिवर्तन के दौर में आदिवासी<br>डॉ. फूलसिंह सहारिया, हंसराज वर्मा | 27 |
| 4. | भील संस्कृति: एक अध्ययन - राजस्थान के संदर्भ में<br>मन्नूराम मीना | 37 |
| 5. | जनजातीय अस्तित्व और संघर्ष की सार्थक प्रस्तुति करता 'ग्लोबल गाँव का देवता'<br>डॉ. मनोज पण्ड्या | 49 |
| 6. | आदिवासी संसार: एक फेंटैसी<br>श्रीमती रूपा | 55 |


Scanned with CamScanner

7. जनजातीय समाज में विवाह एवं विवाह विच्छेद परम्पराएँ 72
डॉ. मानप्रकाश मीना

8. ब्रिटिश शासन में जनजाति विद्रोह: एक विवेचन 79
महेन्द्र सिंह, मंजू जैवरिया

9. राजस्थान के आदिवासी समाज की समस्याएँ 89
डॉ. आंचल मीना

10. आदिवासी साहित्य की अवधारणा 100
हेमलता कुमारी मीना, डॉ. मन्जू मीना

11. आदिवासी संघर्ष एवं मानवाधिकार 110
डॉ. सुचेता गुप्ता

12. आदिवासी जन: एक अध्ययन 119
डॉ. रामेश्वर प्रसाद मीना

13. औषधीय पौधे: आदिवासी अंगरंग 123
डॉ. दुर्गेश नन्दनी

14. आदिवासी साहित्य: मूल्य व परम्परा 135
बाबूलाल बैरवा 'नागर'

15. हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी स्त्री संघर्ष 142
सीमा कुमारी मीना

16. बदलते परिवेश में जनजातीय महिला 152
डॉ. राकेश कुमार

17. राजस्थान के स्वाधीनता संग्राम में आदिवासी मीणा जनजाति की भूमिका 170
रजनी मीणा


Scanned with CamScanner

# 9

# राजस्थान के आदिवासी समाज की समस्याएँ

डॉ. आंचल मीणा*

भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत आदिवासी के नाम से संबोधित की जाने वाली जातियाँ प्रागैतिहासिक काल की जातियाँ समझी जाती थी। डॉ. गुहा ने अपनी पुस्तक A Outline of the Racial Ethrology in India, में लिखा है कि भारत में मानव की उत्पत्ति ही नहीं हुई वरन् यहाँ सभी आदि जातियाँ किसी न किसी समय बाहर से आकर निवास करने लगी। उन्होंने भारत में बाहर से छः जातियाँ (हब्सी, आदिम, आस्ट्रेलियायी, मंगोलाइड, मध्यसागरीय नस्ल, पश्चिमी ब्रेंचीसेफल तथा नार्डिक) का प्रवेश बताया है। फिर भी इन्हें एक निश्चित समुदाय के नाम से संबोधित करने का प्रयास स्वतंत्र भारत के संविधान की धारा 342 के अंतर्गत किया गया है। इसी प्रकार भारत की राष्ट्रीय सरकार द्वारा इनके हितों की रक्षार्थ सन् 1956 में एक सूची तैयार की गई जिसे शिड्यूल कास्टस और शिड्यूल ट्राइबस लिस्ट्स मॉडीफिकेशन कानून कहते हैं। आदेश संख्या 414 के अनुसार इन्हें मूल जनजाति और उप जनजाति में विभक्त किया गया है। इसके अनुसार एल.एम. श्रीकान्त ने अपनी पुस्तक Classification of Tribals में संख्या 550 बताई। इन्हें भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति घोषित किया गया है।

प्रो. ए.आर. देसाई ने जनजाति संबंधी उपर्युक्त परिभाषाओं के तारतम्य में जनजाति के कुछ सामान्य लक्षण लक्षित किये गये हैं।

1. वे सभ्य जगत् से दूर पर्वतों व जंगलों के दुर्गम स्थानों में निवास करते हैं।

* सहायक आचार्य- राजनीति विज्ञान, चाबू शोभागम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

Scanned with CamScanner

2. वे निग्रोइड, प्रोटोलाइड अथवा मंगोलायड में से एक प्रजाति से संबंधित होते हैं।
3. वे जनजातीय भाषा का प्रयोग करते हैं।
4. वे आदिम धर्म को मानते हैं जो कि सर्वजीववाद के सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं जिसमें भूतों तथा आत्माओं की पूजा का महत्वपूर्ण स्थान होता है।
5. वे जनजातीय व्यवसायों को अपनाते हैं। जैसे उपयोगी प्राकृतिक वस्तुओं का संग्रह, कृषि, शिकार, वन में उत्पन्न वस्तुओं के संग्रह में संलग्न रहना।
6. वे सामान्य रूप से मांस भक्षी होते हैं।
7. वे मदिरापान के आदी होते हैं।

**आदिवासी समाज की प्रमुख समस्याएँ निम्न प्रकार से हैं -**

**1. अशिक्षा**

निरक्षरता, भील समाज की एक बड़ी समस्या है। निरक्षरता का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देता है। लोग स्वास्थ्य के नियमों से अपरिचित हैं, कुपोषण के शिकार हैं, अंधविश्वास व रूढ़ियों का जन्म आदि सब निरक्षरता का ही परिणाम है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में समुचित विकास का होना, जनाधिक्य, मृत्युदर में वृद्धि इसी का परिणाम है। निरक्षरता के कारण ग्रामीण या निम्न वर्ग के लोगों को हमेशा शोषण सहन करना पड़ता है। स्त्रियों की दीन-हीन दशा का कारण निरक्षरता है। निरक्षरता के कारण व्यक्ति अपना उचित अनुचित भी नहीं समझता है। शिक्षा, दया, क्षमा, सहानुभूति, प्रेम, श्रद्धा आदि गुणों का विकास करती है। हृदय को परिष्कृत करती है।

शिक्षा के बिना मानव पशु के समान है क्योंकि शिक्षा ही सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण में सहायक होती है और मानव को अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ बनाती है। जो महत्व शरीर के लिए भोजन का है, वही शिक्षा का सामाजिक जीवन के लिए है। अतः शिक्षा मानव-जीवन का अनिवार्य अंग तथा महत्वपूर्ण आवश्यकता है। फिलिप्स के अनुसार "शिक्षा वह संस्था है जिसका केंद्रीय तत्व ज्ञान का संग्रह है।"



महात्मा गांधी "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे के शरीर मन और आत्मा में विद्यमान सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास करना है।"

दक्षिणी राजस्थान में शिक्षा व्यवस्था अनेक कठिनाइयों से ग्रस्त है। अनेक स्कूलों, कॉलेजों की स्थापना के उपरांत भी यहाँ अशिक्षा का प्रतिशत साक्षरता की तुलना में अत्यधिक है। छोटे बालकों में अपव्यय व अवरोधन की समस्याएँ अत्यधिक है। ग्रामों में पहली कक्षा में प्रवेश लेने वालों में से 60 प्रतिशत छात्रों को पाँचवी कक्षा तक स्कूल छोड़ना पड़ जाता है। उसका कारण लोगों की सामाजिक-आर्थिक कठिनाइयाँ व स्कूलों में आवश्यक सुविधाओं का अभाव होता है। इस प्रकार शिक्षा प्रणाली को सुव्यवस्थित करने के लिए समाज में आवश्यक जागरूकता की आवश्यकता है।

**2. लिंग असमानता**

आदिवासी समाज के संरचनात्मक, संस्थागत और संगठनात्मक ढांचे पर लिंग असमानता का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। लिंग भेद की अवधारणा के अन्तर्गत स्त्री और पुरुष के बीच में सामाजिक दृष्टिकोण से जो भिन्नताएँ हैं उनका अध्ययन किया जाता है। इस अवधारणा का प्रयोग स्त्री-पुरुष के बीच शारीरिक क्षमताओं के आधार पर जो सामाजिक संस्थाओं तथा संगठनों में श्रम विभाजन होता है उसके सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक तथा अन्य ऐसी ही विशेषताओं और लक्षणों के आधार पर भिन्नताओं के क्रमबद्ध और व्यवस्थित अध्ययन, विश्लेषण और व्याख्या करने के लिए किया जाता है। काम में सहभागिता, समाजीकरण, स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त करने की क्षमता, साक्षरता दर, संपत्ति में हिस्सेदारी आदि के आधार पर पाया गया है कि स्त्रियों की परिस्थिति सभी क्षेत्रों में खराब है। समाज पुरुष प्रधान है और पुरुषों की परिस्थिति सभी क्षेत्रों में अच्छी है। सत्ता पुरुष के पास में रहती है। पिता से पुत्र को सत्ता हस्तांतरित होने के कारण नारी का समाज में निम्न स्थान है। लिंग असमानता पुरुषों के द्वारा महिलाओं पर नियंत्रण करने का सोचा-समझा सामूहिक प्रयासों एवं योजनाओं का परिणाम है। पुरुषों ने महिलाओं पर अपनी सत्ता का सामूहिक प्रयासों एवं योजनाओं का परिणाम है। पुरुषों ने नारियों पर अनेक प्रतिबंध एवं नियंत्रण लागू करके उनकी परिस्थिति दयनीय कर दी है।

**3. जातिवाद की संकीर्णता**

वर्तमान में आदिवासी समाज में सबसे ज्वलंत समस्या है जातिगत संकीर्णता। अपनी स्वयं की जाति से प्रेम व सहानुभूति रखना सभी का मानव स्वभाव होता है।

Scanned with CamScanner

अत: यह उचित व आनंददायक है परंतु इसके विपरीत सिर्फ अपनी जाति के प्रति लगाव की भावना व अन्य जातियों का तिरस्कार करना जातिगत संकीर्णता को दर्शाता है। श्रेष्ठ समाज अपने विकास के साथ-साथ सभी जातियों का सम्मान व आदर करते हुए अपने प्रगतिशील पथ पर अग्रसर होते हैं।

हमारे आस-पास बहुत से समाज व जातियाँ विद्यमान हैं और सभी मिलजुल कर साथ आगे बढ़ सकते हैं। यदि हम हमारे मन में दुर्भावना रखेंगे तो वे भी हमारे लिए विरोधी भावना को जन्म देंगे जिससे वातावरण हिंसात्मक हो जाएगा। यह भावना समाज को संघर्ष और असंतोष के अलावा कुछ प्रदान नहीं करेगी। [illegible] कुछ भी नहीं यह सिर्फ कुछ असामाजिक तत्वों की फैलाई हुई अफवाह है इसलिए हमको इन अफवाहों से बचकर किसी भी जाति से कोई मनमुटाव नहीं रखना क्योंकि कुछ असामाजिक तत्व इस तरह की अफवाह फैलाकर अपना निजी स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। लेकिन हमें ऐसे तत्वों के दुःसाहस का अपनी समझदारी के साथ डटकर मुकाबला करके जातिगत संकीर्णता को दूर रखना है। सभी जातियों का सम्मान करते हुए अपनी जाति को प्रगतिशील बनाना होगा।

### 4. निर्धनता

आदिवासी गाँव निर्धनता की समस्या से ग्रसित हैं और यह एक ज्वलंत समस्या है। गाँव में लोगों को पौष्टिक भोजन, वस्त्र व मकान उपलब्ध नहीं हो पा रहा है जो व्यक्ति की आवश्यकता मानी जा रही है। न्यूनतम शारीरिक आवश्यकताओं में जीवित, सुरक्षित और स्वस्थ रहने की अनिवार्य आवश्यकताएँ आती हैं, जैसे खाना और पोषण तथा घर और स्वास्थ्य की। ग्रामीण आदिवासी व्यक्ति ये सभी आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर पाता है। निर्धनता एक अभिशाप है। यह अनेक बुराइयों को जन्म देती है। व्यक्ति का बौद्धिक व मानसिक स्तर पर भी गिर जाता है। फलत: समाज में उसकी प्रतिष्ठा कम हो जाती है। कभी-कभी वह असामाजिक कार्यों में लिप्त हो जाता है। इस प्रकार निर्धनता व्यक्ति के जीवन-स्तर की गिरावट का भी कारण बनती है। दक्षिणी राजस्थान में यह बहुतायत देखने को मिलती है।

### 5. बेरोजगारी

आदिवासी समाज में धनोपार्जन का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण व आवश्यक कार्य है जो व्यक्ति द्वारा भोजन, वस्त्र और अनाज आदि की व्यवस्था करने के उद्देश्य से किया जाता है, जब व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से कार्य करने के लिए सक्षम व इच्छुक होता है और उस समय भी वह कार्य प्राप्त नहीं कर पाता तो



उसे बेरोजगार का नाम दिया जाता है और कार्य प्राप्त न करने की स्थिति बेरोजगारी कहलाती है। रोजगार न मिलने से उसमें [illegible] उत्पन्न हो जाती है।

#### बेरोजगारी के कारण

1. आयु
2. व्यावसायिक अयोग्यता
3. बीमारी एवं शारीरिक अयोग्यता
4. नौकरी की प्रतिष्ठा
5. जनसंख्या में वृद्धि
6. भौगोलिक गतिशीलता का अभाव
7. कुटीर उद्योगों का विनाश
8. दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली

### 6. समाज में युवाओं की समस्या

आदिवासी समाज के सामाजिक संगठनों के लिए यह आवश्यक है कि समाज का प्रत्येक सदस्य विशेष वर्ग आदि सुखी और प्रसन्न रहे, उनमें अपनी परिस्थिति और भूमिका के प्रति संतोष हो उनका वर्तमान और भविष्य सुरक्षित हो। समाज का एक बहुत बड़ा युवा वर्ग विद्यार्थी वर्ग है। जब तक विद्यार्थी वर्ग स्वयं के वर्तमान तथा भविष्य के प्रति संतुष्ट तथा संतोषी नहीं होगा तो वह समाज की व्यवस्था व संगठन के विरुद्ध कार्य करेगा, उससे समस्याएँ पैदा होंगी।

सामाजिक संगठनों व व्यवस्था को बनाए रखने के लिए युवाओं एवं विद्यार्थियों की क्षमता, कार्यक्षमता तथा शक्ति का उपयुक्त विकास तथा उपयोग करना अत्यावश्यक है अन्यथा अभाव में युवा एवं विद्यार्थी असंतोष जैसी विकराल सामाजिक समस्या के शिकार हो जाएंगे।

ऐसे युवा जिनके व्यक्तित्व में एक अपूर्व [illegible] है उन्हें समस्यात्मक माना है। समस्यात्मक युवा जिस संस्कृति में रहता है उसके आदर्शों मानकों को अपने व्यक्तित्व में संगठित नहीं कर पाता है और वह समाज विरोधी कार्य करने लगता है। [illegible] ने एक अध्ययन के आधार पर बताया है कि बहुत संयोग दुराचरण, चोरी, अवैध रीति से अग्निशस्त्र रखना आदि कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं

जिनके लिए उनकी गिरफ्तारी भी हो सकती है लेकिन ये लोग समाज, समायोजित वर्ग में आते हैं, इसी प्रकार के लोग समाज में गलत कार्य करने में कोई कमी नहीं छोड़ते हैं। वे लोग समस्यात्मक व मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समाज विरोधी कार्य करते हैं। समस्यात्मक की ही श्रेणी में आते हैं।

समस्यात्मक युवा का बौद्धिक स्तर निम्न होता है। बहुत से लोगों में आंतरिक तनाव चिड़चिड़ापन बेचैनी, अधीरता आदि देखी जाती है। समाज से प्रायः उनकी अनबन रहती है। यहाँ तक कि स्वयं अपने से भी इनका समायोजन नहीं हो पाता।

## 7. वृद्धजनों की समस्याएँ

आदिवासी आधुनिकीकरण का प्रभाव सर्वाधिक वृद्ध पीढ़ी पर पड़ा है। जनसंख्या में उसका अनुपात बढ़ा है और उनके समक्ष सामाजिक आर्थिक और सामंजस्य स्थापित करने में अनेक कठिनाइयाँ आई हैं। बढ़ती हुई दीर्घायु एवं जीवन सम्पन्नता के कारण व्यक्ति जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि हुई है। वृद्धावस्था के कारण व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक शक्ति क्षीण हो जाती है। इन क्षीणताओं के कारण उनको समाज में भार स्वरूप समझते हैं और इस धारणा के कारण उनसे लोग तिरस्कार की भावना का व्यवहार करते हैं। वृद्धों की उपेक्षा इतनी हो जाती है कि एक प्रकार से वे अकेलेपन के शिकार होते हैं। प्राचीनकाल में वृद्धों का सम्मान किया जाता था। परिवार के निर्णय पर उनका अधिकार होता था किंतु अब आदिवासी समाज में वृद्धों को एक अनावश्यक बोझ समझा जाता है। वृद्धजन न केवल स्वयं के लिए बल्कि वे अपने परिवारों और संपूर्ण समाज के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर देते हैं।

दक्षिणी राजस्थान में आर्थिक विपन्नता अधिक है वहाँ भोजन प्राप्त करना दुर्लभ होता है तो ऐसी स्थिति में वृद्धजनों को उनके भाग्य पर छोड़ दिया जाता है। उन्हें अपना जीवन-यापन खुद करने के लिए छोड़ दिया जाता है। उनकी बातों को प्राथमिकता न देकर उन पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

वर्तमान में परिवार व्यवस्था अनेक कारणों से परिवर्तित हो गई है जिसके कारण विभिन्न पीढ़ियों में पहले जैसा स्नेह नहीं है। एकाकी परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है। परिवार के सदस्यों की परिवार से बाहर व्यवसाय करके अपने बड़ों के शासन से मुक्त हो जाते हैं। व्यावसायिक पीढ़ी अपना अलग घर बसा लेती है। वहाँ पर वृद्धों को साथ रखना उन्हें अपनी निजता में व्यवधान लगने लगता है।



## 8. मादक द्रव्यों का सेवन

आदिवासी समाज प्रारंभ से ही [illegible] रहा है, [illegible] व थकान से राहत हेतु मादक द्रव्य [illegible] समझा जाने लगा। [illegible] और [illegible] से [illegible] अनुसरण करने वाले मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं। ये मादक द्रव्य कुछ समय के लिए व्यक्ति के मानसिक तनाव को कम कर देते हैं। चिंता, विषाद और यहाँ तक कि व्यक्ति की मनोदशा को भी परिवर्तित कर देते हैं जिससे अस्थायी रूप से उल्लास, आनंद मिलता है। संपूर्ण राजस्थान के आदिवासी [illegible] के अभ्यस्त हैं और उन पर समाज के द्वारा कोई पाबंदी नहीं लगाई जाती है। नशे की आदत से पुरुष वर्ग अपनी मनमानी पूरे परिवार पर करता है और वह अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में से [illegible] नशा [illegible] करता है जिससे परिवार का जीवन स्तर व जीवन-यापन का तरीका निम्न हो जाता है परंतु वह अपनी आदत को नहीं छोड़ना चाहता है। आदिवासी समाज में दो प्रकार का नशा किया जाता है -

1. **शराब सेवन:-** यह एक ऐसी आदत बन जाती है कि व्यक्ति इसे लेने के लिए विवश हो जाता है। कुछ लोग थकान और मन की उदासी को दूर करने के लिए लेते हैं तो कुछ स्वयं को मुक्त अनुभव करने के लिए अथवा उत्साह [illegible] और उत्तेजना के रूप में इसे ग्रहण करते हैं। इसका प्रभाव यह होता है कि इससे तनाव [illegible] होता है। निर्णय क्षमता मंद हो जाती है। यह पीड़ानाशक होती है। इसमें विवेक का क्षय होता है। इसके सेवन के परिणामस्वरूप अन्य रोगों की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। अंगों को नुकसान पहुँचता है व शारीरिक रोग पनपने लगते हैं।

2. **निकोटिन:-** निकोटिन द्रव्यों में बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू और सिगार आदि को लिया जाता है। इन द्रव्यों का सेवन व्यक्ति के फेफड़े व श्वास नली को प्रभावित करता है जिससे अनेक भयावह बीमारियाँ हो जाती हैं जिनमें हृदय रोग, अस्थमा और कैंसर तक हो जाते हैं।

## 9. भ्रष्टाचार

हमारे व्यवहार का एक अंग बन गया है। देश के प्रशासनिक अधिकारी व सत्ताधारी व्यक्तियों के व्यवहार, विचार एवं कार्यक्रमों में घर बना गया है। जो नेता लोग स्वच्छ प्रशासन, राष्ट्रीय चरित्र, सामाजिक समानता या समाजवाद व देशभक्ति

Scanned with CamScanner

आदि के नारे लगाते हैं, भाषणों में इनकी दुहाई देते हैं, बड़े-बड़े नेताओं के पद-चिन्हों पर चलने का आग्रह करते हैं, ये सब आडंबर मात्र हैं। ये लोग न तो इस इस भ्रष्टाचार जैसी समस्या के प्रति जागरूक हैं, न स्वयं इससे विमुक्त ही हैं। आज स्थिति यह है कि भ्रष्टाचार को रोकना भारतीय आदिवासी समाज की नियति में ही नहीं रहा है।

आदिवासी समाज के दक्षिण राजस्थान के सर्वे के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनभिज्ञतावश यहाँ की भोली-भाली जनता का सभी शोषण कर रहे हैं। उन्हें अज्ञानता है, इस वजह से अधिक कर वसूली कर ली जाती है। मनमाना ऋण लिया जाता है। उनका जायज हक भी पता नहीं होने पर उन्हें नहीं दिया जा रहा है। बी.पी.एल कार्ड बनाना भी उनके लिए एक व्यवसाय हो गया है कि अगर जो पैसा देगा उसका कार्ड बनेगा। आज भ्रष्टाचार के चलते कोई लाभ प्राप्त करने से डरने लगा है कि यदि कुछ मिलेगा उसकी एवज में पता नहीं क्या-क्या देना पड़े इसलिए पहले से ही दूर रहना पसंद करते हैं। उन्हें कोई समझाने वाला नहीं है कि यह कार्यवाही इस प्रकार से होगी।

## 10. अधिकारियों के विवाह से उत्पन्न समस्या

आदिवासी समाज पिछड़ा हुआ समाज था अत: इस समाज को प्रगति पर लाने के लिए सरकार ने आरक्षण की व्यवस्था की तथा इस व्यवस्था का लाभ प्राप्त करके प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं में जो आगे बढ़े व अधिकारी बन गये परंतु उनकी एक अभिन्न समस्या सामने आई कि वे अधिकारी बनने के उपरांत अपनी पूर्व पत्नी जो कि निरक्षर व गाँव में रहती है उसके अलावा भी एक और महिला के साथ शहर में रहने लगते हैं। यह करना उस गाँव वाली महिला के लिए बहुत कष्टदायक व दयनीय है। वह अपने अधिकारों के लिए, हमेशा लड़ती रहती है, उसके बच्चों की पढ़ाई मामूली ढंग से होती है। अत: जो उन बच्चों को मिलना चाहिए था वह नहीं मिला। परित्यागी स्त्री ने अपनी उम्र अकेले रहकर निकाली और उसे कुछ कहने का अधिकार भी नहीं दिया गया। उसे तो सिर्फ चुप रहकर जीवन निकालना उद्देश्य बताया गया। यह उदाहरण सवाईमाधोपुर, करौली आदि क्षेत्रों में पाये जाते हैं। बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर में तो परंपरा के तहत् ही कई पत्नियों को रखने का चलन है। अत: संपन्नशीलता स्त्रियों की गिनती से ही आंकी जाती है।



## 11. बाल विवाह

विवाह एक जिम्मेदारीपूर्ण संस्कार है। राजस्थान में विवाह को [illegible] बढ़ाने के लिए भरसक प्रयास किया जाता है। इस संस्कार को येन-केन प्रकारेण पूरा करने के लिए लड़की व लड़के की उम्र भी कोई मायने नहीं रखती। परिवार के बुजुर्ग यह रिश्ता अपने व्यवहार के [illegible] कर देते हैं व अपनी बात [illegible] इसके लिए वे उम्र को कोई अहमियत नहीं देते। अपने छोटे उम्र के बच्चों की शादी बिना किसी डर के तय कर देते हैं। [illegible] वैसा भी कभी इसका विरोध नहीं करते उन्हें लगता है कि प्राचीन परम्पराओं के विरोध करने से समाज के क्रोध का भागी बनना पड़ेगा। यह परम्परा उत्तरी राजस्थान के भागों में विशेष रूप से पाई जाती है।

### बाल विवाह के कारण

1. लड़कियों की रखवाली के डर से
2. गरीबी की वजह से
3. जिम्मेदारी खत्म करने का उद्देश्य
4. बुजुर्गों के फैसले को सर्वोपरि मानना

## 12. दहेज प्रथा

दहेज प्रथा मीना समाज की प्रमुख समस्याओं में से एक है। इस समस्या ने लड़कियों के विवाह को अति-दुष्कर कार्य बना दिया है। दहेज वह धन-संपत्ति है जो विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष द्वारा वर-पक्ष को दी जाती है। संपूर्ण नारी जाति इस समस्या से त्रस्त है। अनेक कन्याओं के लिए यह एक जानलेवा रोग है। अत: आज दहेज की समस्या से निपटने की अति-आवश्यकता है। यह समस्या उत्तरी राजस्थान में अधिक है क्योंकि दक्षिण राजस्थान में गरीबी होने से इसका प्रचलन नहीं है। वहाँ पर पैसे की कमी से इस कुप्रथा का चलन कम है।

### दहेज प्रथा के प्रभाव निम्न हैं -

1. पारिवारिक विघटन
2. आत्महत्या
3. ऋणग्रस्तता

4. बेमेल विवाह
5. मानसिक असंतुलन
6. झगड़ालू प्रवृति का विकास
7. स्त्रियों की कमी की स्थिति
8. अपराधवृत्ति को प्रोत्साहन
9. अविवाहित जीवन

### 13. स्त्री उत्पीड़न

स्त्री एक लंबे काल से अवमानना, यातना और शोषण का शिकार रही है। जिनके काल के हमारे पास सामाजिक संगठन और पारिवारिक जीवन के लिखित प्रमाण उपलब्ध है। आज शनैः-शनैः महिलाओं को पुरुषों के जीवन में महत्वपूर्ण प्रभावशाली और अर्थपूर्ण सहयोगी माना जाने लगा है, परंतु कुछ दशक पहले तक उनकी स्थिति दयनीय थी। विवाहप्रथाओं, संस्थागत रिवाजों और समाज में प्रचलित प्रतिमानों ने उनके उत्पीड़न में काफी योगदान दिया है। इनमें से कुछ व्यावहारिक रिवाज आज भी पनप रहे हैं। महिलाओं में शिक्षा के विकास और महिलाओं की धीरे-धीरे बढ़ती हुई आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद अनेक महिलाएँ अब भी हिंसा की शिकार हैं।

आदिवासी समाज में अधिकतर लोग शराब का सेवन करते हैं फलस्वरूप अपनी पत्नी पर अत्याचार करते हैं और अमानवीय व्यवहार करते हैं।

### 14. मृत्यु भोज

आदिवासी जाति में भी शव का दाह संस्कार अन्य हिंदुओं समान ही किया जाता है। मृत्यु से संबंधित अन्य संस्कार भी हिन्दु जातियों की तरह ही किए जाते हैं। इनके द्वारा मृतक की अस्थियों को हरिद्वार, गंगा या पवित्र नदी में प्रवाहित करने की परंपरा है। आदिवासियों द्वारा मृतक का बारह दिन का शोक रखा जाता है। बारहवें दिन संबंधियों एवं गाँव के लोगों को भोजन करवाया जाता है। यह भोजन व्यवस्था एक कुरीति के रूप में विकसित है। इस परम्परा के अंतर्गत गरीब होने पर भी उसे सबको खाना खिलाना पड़ेगा और इस ऋण को चुकाना अनिवार्य है। जबकि एक व्यक्ति की मृत्यु पर ऋण चढ़ा कर खाना खिलाना कौनसी समझदारी है? परंतु अभी यह परम्परा चलती आ रही है इस प्रकार आदिवासी समुदाय में मृत्युभोज पर अनावश्यक खर्च किया जाता है।



### 15. मौताणा

दक्षिणी आदिवासी समाज में यह एक प्रथा प्रचलित है कि मृत्यु से संबंधित कोई भी या [illegible] समाज द्वारा लगाई [illegible] अपना घर छोड़कर आज पूरे परिवार सहित जंगल में [illegible] भी जनजाति समाज में देखने को मिलती है।

## संदर्भ सूची


डॉ. मुना, 'एन आउटलाइन ऑफ सोशल एंथ्रोपोलॉजी'।

एल.एम. श्रीकांत, [illegible]।

कर्नल टॉड, 'ऐनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान'।

संतोष कुमारी जैन, "भीलमीणा"।

डॉ. ओझा, 'उदयपुर राज्य का इतिहास'।

रजनी कोठारी, 'कास्ट इन इंडियन पॉलिटिक्स'।

राम आहूजा, 'सामाजिक समस्याएँ'।

रिचर्ड [illegible], 'सोशियल प्रोब्लम्स'।

जी.एस. घुर्ये, 'कास्ट क्लास एण्ड ऑक्युपेशन'।

ई.ओ. लियोनार्ड, 'क्राइम एण्ड सोसायटी'।

प्रकाश चन्द्र मेहता, 'भारत के आदिवासी'।


❑❑❑

Scanned with CamScanner

ANNEXURE- 18

# भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
# (Indian National Movement)


**डॉ. जगत सिंह मीना**

एम.ए. (इतिहास) पी-एचडी.,

व्याख्याता, (इतिहास विभाग)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

राजगढ, अलवर (राजस्थान)



प्रकाशक

**आदित्य पब्लिशिंग हाउस**

टी-7, एस.जी. एम. हाउस,

नाटाणियों का रास्ता,चौडा रास्ता, जयपुर-302003

फोन: 0141-2316149 मोबाईल: 9928612062



© प्रकाशकाधीन



**द्वितीय संस्करण**

संस्करण 2018

**ISBN**

978-93-82190-35-6

**मूल्य**

850.00

**लेजर टाईपसेटिंग**

एन. के. आर्टस, जयपुर

**मुद्रक**

शीतल ऑफसेट प्रिन्टर्स, जयपुर

**आदित्य पब्लिशिंग हाउस, जयपुर**



समन्वयक
Coordinator
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

# आदिवासियों के प्रमुख त्यौहार, परम्पराएँ एवं सामाजिक जीवन

डॉ. मीनाक्षी मीना

COMPLIMENTARY/AUTHOR COPY

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| • | भूमिका | *iii* |
| 1. | आदिवासी समाज | 1 |
| 2. | आदिवासियों की सृजनात्मक कला का स्वरूप | 56 |
| 3. | आदिवासी समाज का इतिहास | 72 |
| 4. | आदिवासी समाज के लोकगीत एवं साहित्य परम्परा | 98 |
| 5. | आदिवासी समाज में विवाह प्रथा एवं परम्पराएँ | 116 |
| 6. | आदिवासी समाज की प्रमुख कहावतें | 150 |
| 7. | नातेदारी-व्यवस्था | 161 |
| 8. | आदिवासियों के प्रमुख त्यौहार एवं संस्कृति | 169 |
| 9. | आदिवासियों की धार्मिक प्रथाएँ | 195 |
| 10. | आदिवासी समाज में शिक्षा व्यवस्था | 215 |
| 11. | आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति | 245 |
| • | संदर्भ ग्रंथ सूची | 258 |

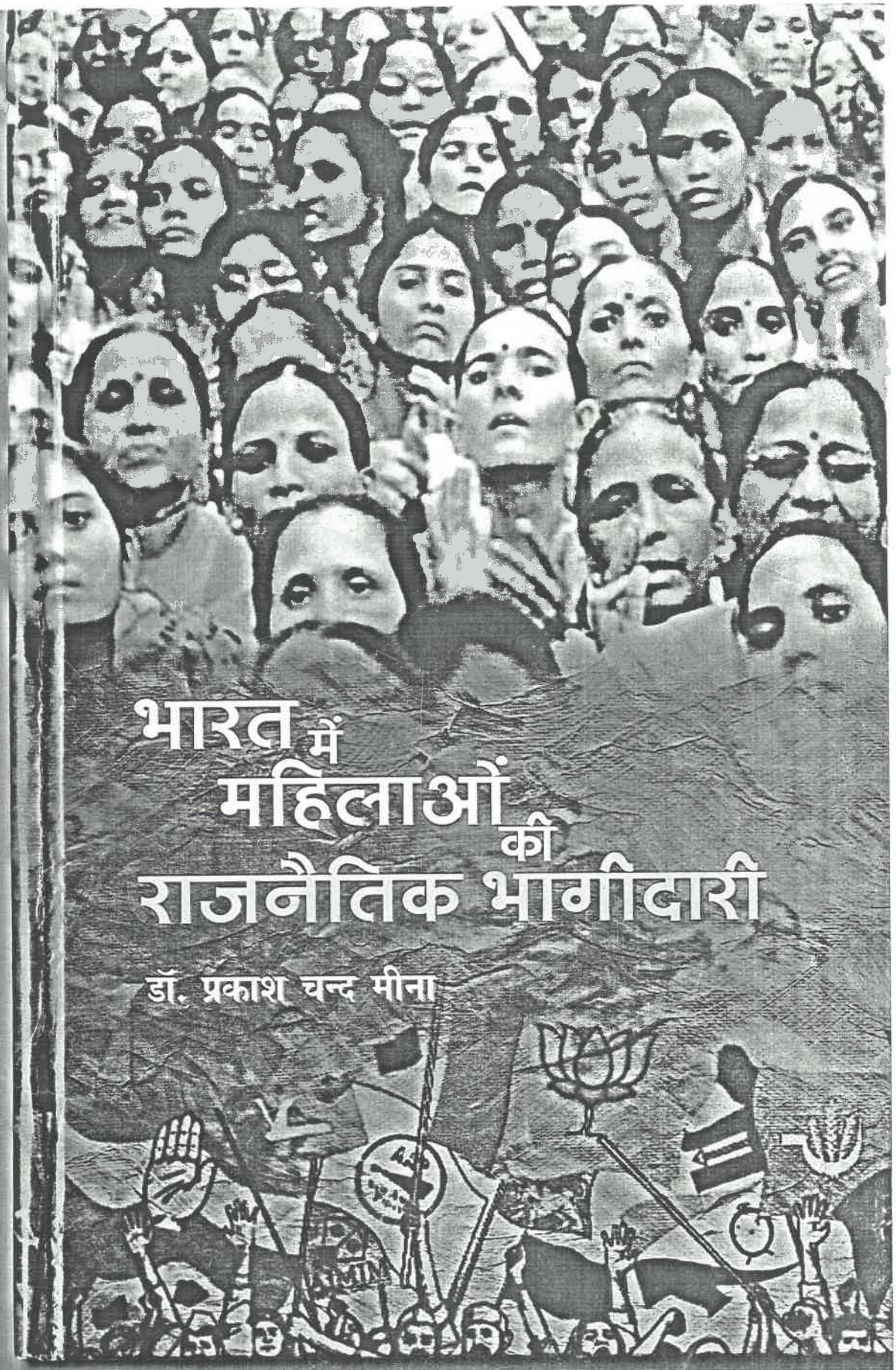

# भारत में महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी

डॉ. प्रकाश चन्द मीना

GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

लेखक
डॉ. प्रकाश चन्द मीना

आई.एस.बी.एन.
978-93-88031-46-2

प्रकाशक
**बाबा पब्लिकेशन**
930-931, गजकृपा कॉम्पलैक्स, एस.बी.बी.जे. बैंक के पीछे
गोवर्धन नाथजी की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर
मो. 8003502015, 8952834490
E-mail : babapublication@gmail.com

संस्करण
2019

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

मूल्य
₹ 1095/-

लेजर टाइपसैटिंग
राजीव कुमावत

मुद्रक
नई दिल्ली

पुस्तक प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना सम्भव है। अत: किसी भी त्रुटि, कमी एवं लोप के कारण क्षति अथवा क्लेष के लिए लेखक, प्रकाशक, वितरक अथवा मुद्रक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.
राजकीय महाविद्यालय
प्राचार्य

2019



# भारत में उभरता हुआ पंचायती राज

डॉ. प्रकाश चन्द मीना



प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

Coordinator
IQAC CELL
Govt. College Rajgarh (Alwar)
राजकीय महाविद्यालय

लेखक
डॉ. प्रकाश चन्द मीना

आई.एस.बी.एन.
978-93-88031-44-8

प्रकाशक
**बाबा पब्लिकेशन**
930–931, गजकृपा कॉम्पलैक्स, एस.बी.बी.जे. बैंक के पीछे
गोवर्धन नाथजी की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर
मो. 8003502015, 8952834490
E-mail : babapublication@gmail.com

संस्करण
2019

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

मूल्य
₹ 1395/-

लेजर टाइपसैटिंग
राजीव कुमावत

मुद्रक
नई दिल्ली

Coordinator

पुस्तक प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना सम्भव है। अतः किसी भी त्रुटि, कमी एवं लोप के कारण क्षति अथवा क्लेष के लिए लेखक, प्रकाशक, वितरक अथवा मुद्रक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

प्राचार्य

2018-19

# Shree Balaji Publication

C-24, VIJAY VIHAR, NAYA KHEDA, AMBABARI, JAIPUR
(M) 07023855701, E-mail : shreebalajipublication1@gmail.om

Date : 08.10.2019

## *TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN*

This is to certify that my publishing company, M/s Shree Balaji Publication is registered with Raja Rammohan Roy National Agency for ISBN, Government of India, Ministry of Human Resource Development, Department of Higher Education, New Delhi and has published the following books with below mentioned details :

| | | |
|---|---|---|
| Book's Name | : | TEXT BOOK OF ALGAE |
| Name of Author | : | Om Prakash Meena |
| ISBN | : | 978-93-87615-61-8 |
| Year | : | 2019 |

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar)
राजकीय महाविद्यालय

Scanned with CamScanner

(12)

# TEXT BOOK OF ALGAE

Om Prakash Meena

SHREE BALAJI PUBLICATIONS
JAIPUR

*By :*

**Om Prakash Meena**

*Published by :*

**SHREEBALAJI PUBLICATIONS**

Choura Rasta,
Jaipur - 302039
(M) 9166343237
email : shreebalajipublications1@gmail.com

© Author

ISBN : 978-93-87615-61-8

Price : 1195/-

First Edition : 2019

Laser typesetting : *Jaipur*

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any mean without permission in writing from the publisher.

*Printed at :* New Delhi

# Contents


| | | |
|---|---|---|
| | *Preface* | 1 |
| 1. | Introduction | 14 |
| 2. | Myxophyceae | 26 |
| 3. | Chlorophyceae | 32 |
| 4. | Phaeophyceae | 41 |
| 5. | Rhodophyceae | 49 |
| 6. | Yellow-Green Algae | 54 |
| 7. | Chemical Constituents of Seaweeds | 59 |
| 8. | Bacillariophyceae | 73 |
| 9. | Phylogeny | 79 |
| 10. | Lichen | 108 |
| 11. | Life-Cycle Patterns | 116 |
| 12. | Commercial Cultivation of Algae | 159 |
| 13. | Algal Bloom | 166 |
| 14. | Heteroknot | 178 |
| 15. | Algae structure and reproduction | 192 |
| 16. | Euglenophyta and Dinoflagellate | 210 |
| 17. | Coral, Coral reef and Symbiodinium | 249 |
| | *Bibliography* | |